भगत कबीर – सबद १२
अंधकार सुख कबहि न सोई है ॥
राग गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२५

अंधकार सुख कबहि न सोई है ॥
राजा रंक दो मिल रोई है ॥१॥
जउ पै रसना राम न कहिबो ॥
उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥
जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥
प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥
जस जंती महि जीउ समाना ॥
मूए मरम को का कर जाना ॥३॥
हंसा सरवर काल सरीर ॥
राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥

सार: अकसर लोग जन्म और मृत्यु के बीच बेचैनी से भरी लालसा की तड़प अनुभव करते हैं उस चीज़ के लिए जो पहुँच से परे प्रतीत होती है। हमारी उपलब्धियों, संपत्ति या सामाजिक स्थिति के बावजूद भी असंतोष की यह स्थायी भावना आध्यात्मिक पतन का कारण बन सकती है। जबकि असंतोष एक द्वार का काम भी कर सकता है—आत्मनिरीक्षण, शांति, अन्वेषण और पूर्णता के लिए, आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए नहीं । यह हमें अपने सच्चे स्वरूप से फिर से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह जुड़ाव स्पष्टता लाता है और दर्शाता है कि आनंद सीमित में नहीं पाया जा सकता बल्कि इसे केवल अनंत में ही खोजा जा सकता है जहाँ हमें सच्चा आनंद मिलता है। यह अनंतता केवल एक अमूर्त अवधारणा नहीं है बल्कि अस्तित्व की एकता है। स्थिति चाहे जो भी हो शक्तिशाली और गरीब दोनों को कष्ट सहना पड़ता है क्योंकि कोई भी धन, शक्ति या सांसारिक ज्ञान सच्चा आनंद नहीं दे सकता। जब हमारे अनुभव जागरूकता पर आधारित नहीं होते हैं तब हम अनिवार्य रूप से कष्ट सहते हैं।

अंधकार सुख कबहि न सोई है ॥

कोई भी कभी चैन से अंधकार में नहीं सो सकता। यह एक सत्य है कि अज्ञानता में संतोष का आनंद अनुभव नहीं होता।

राजा रंक दो मिल रोई है ॥१॥

राजा और रंक (भिखारी) दोनों ही असंतोष में समान रूप से रोते हैं। यह इस सत्य को उजागर करता है कि पद या धन अज्ञानता और दुख को दूर नहीं कर सकते। (१)

जउ पै रसना राम न कहिबो ॥

यदि ज़ुबान सृष्टि की एकता के बारे में नहीं बोलती,

उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥

जन्म और मृत्यु के बीच व्यक्ति निरंतर असंतोष की स्थिति में रहता है। यह निरंतर कष्ट आध्यात्मिक विकास और पतन के चक्र का प्रतीक है। (१)(विराम)

जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥

जैसे हम किसी पेड़ की छाया में आराम ढूंढते हैं यह हमारे जीवन और संपत्ति का प्रतीक है जो क्षणिक आश्रय के रूप में काम करते हैं। समय के साथ इनकी चमक फीकी पड़ जाती है।

प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥

जब जीवन जाता है तब सोचें कि वास्तव में मालिक कौन है और सांसारिक संपत्ति का क्या होता है। जिससे यह एहसास होता है कि जो कुछ भी प्रिय है जैसे धन, परिवार और प्रतिष्ठा, सब भ्रम है। (२)

जस जंती महि जीउ समाना ॥
जिस तरह संगीतकार की भीतरी ध्वनि को हम राग के रूप में सुनते हैं और फिर यह धुन मौन में लुप्त हो जाती है, यह सृष्टि के भीतर चेतना का प्रतीक है जिसे मृत्यु के साथ विलीन होने वाले शरीर के रूप में अनुभव किया जाता है।

मूए मरम को का कर जाना ॥३॥
मृत्यु के रहस्य को वास्तव में कैसे और कौन समझ सकता है? (३)

हंसा सरवर काल सरीर ॥
हंस चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, अनंत अस्तित्व की झील में तैरता हुआ जहाँ शरीर समय की सीमा में बंधा है।

राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥
कबीर कहते हैं एकत्व के अनंत सार का, अदृश्य, सर्वव्यापी ऊर्जा का आनंद लो। (४)(८)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि मृत्यु एक रहस्य है जिसे केवल बौद्धिकता से नहीं समझा जा सकता, यह पहचान सच्ची अंतर्दृष्टि, आंतरिक अनुभवों और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से शाश्वत आत्मा से जुड़ने से आती है। जिस तरह एक संगीतकार की धुन मौन में विलीन हो जाती है उसी प्रकार चेतना एक शरीर के रूप में प्रकट होती है जो अपने स्रोत जिसे हम मृत्यु कहते हैं, की ओर लौटने से पहले जीवित रहती है, एक अमूर्त अवस्था जो कभी मूर्त थी। भगत कबीर हमारी धारणाओं के लिए छाया और वास्तविकता के लिए वृक्ष के रूपक का उपयोग करते हैं, वह हमें याद दिलाते हैं कि हम अक्सर जीवन की वास्तविकताओं को अपने विचारों से भ्रमित कर देते हैं। वह चेतना को एक सुंदर हंस के रूप में चित्रित करते हैं जो अस्तित्व की झील पर तैर रहा है जबकि शरीर समय से बंधा हुआ है। यह यात्रा हमें जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति पर चिंतन करने और इसकी नश्वरता में निहित सौंदर्य की सराहना करने के लिए आमंत्रित करती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com